देवाधिदेव शिव थलकेदार

डॉ. बसुन्धरा
उपाध्याय

आदि काल से मध्य हिमालय में शिवोपासना का प्रचलन रहा है। शिव के मन्दिर इस क्षेत्र मे कुमाऊँ तथा गढ़वाल दोनो मंडलों अवस्थित हैं। इन मन्दिरों में शिव की पूजा वर्ष पर्यन्त होती है। कुछ विशेष मन्दिरों में शिव पूजा निश्चित समय व काल में होती है। कई उपलक्ष्यों मेलों का सांस्कृतिक व धार्मिक इतिहास काफी प्राचीन है। इन उत्सवों का आर्थिक महत्व तथा इतिहास काफी महत्वपूर्ण है। शिव मंदिर हर भाग में स्थित हैं। शिव और पार्वती को मानने के कारण यहाँ शैव मत की जड़े काफी गहरी और मजबूत है।

भारत आदिकाल से ही अपने धार्मिक विकास एवं परिपक्वता श्रेष्ठता तथा गौरवशाली इतिहास परम्परा के लिए जगत विख्यात है। जिसमें मध्य हिमालय को देवभूमि अर्थात तपोभूमि नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। किसी भी देश का प्राचीन इतिहास उसके संस्कृतिक एवं धार्मिक विकास की पराकाष्ठा का आईना होता है। हमारा हिन्दू धर्म सनातन धर्म कहलाता है जिसका अर्थ है परम्परा के अनुसार चला आता हुआ। यह क्षेत्र शिव पार्वती का निवास स्थान है ।शिव को हिन्दुधर्म में एक ऐसे देवता बताया गया है जो आदि देव के सगुण अर्थ सह -देह -धारी देव हैं। शिवजी एकमात्र ऐसे देव हैं जो देवता होते हुए भी सगुण रूप में मृत्यु लोक अर्थात धरती में कैलाश पर निवास करते हैं। कुछ विद्वान तो यहाँ तक कहते है कि शिव ने विभिन्न अवतारों के द्वारा धर्म का प्रचार भी किया है। राम चरित मानस में तुलसी कहते हैं कि जब जब इस संसार मे अधर्म होगा ईश्वर आएंगे और राक्षसों का सर्वनाश करेंगे। हिमालय क्षेत्र की भूमि का वर्णन महाभारत में इस प्रकार किया गया है- दर्शयामासमें शीघ्रं मातलिः शक्र सारथिः ।

ततः शक्रस्य भकामपश्यममरावतीम् ।।
दिव्येः कामफलेवृक्षै स्त्रेक्ष समलङःकृताम ।
न तत्र सूर्यस्तपति न शीतोष्णेनचलमः ।।
न बाधते तत्र रजस्त्रतास्तिन जरानृप ।
न तत्र शोके दैन्यं वा दौर्वल्यपलक्ष्यते ।।
दिवौक सांमहाराज न ग्लनिररिमर्दन ।
न क्रोधलोभे तत्रास्तां सुरादिना विशाम्पते ।।
नित्य तुष्टाश्रुते राजन्प्राणिनः सुखेश्मनि ।
नित्य पुष्पफलास्तत्र पादपा हरितच्छयाः ।।
पुष्करिन्याश्च विविधाः वघ्म सौगान्धकायुताः ।
शीतस्तश्रववो वायुः सुगन्धीजीवनः शुचिः ।।
सर्वत्र विचिताय भूमिः पुयपतिभूषिता ।
मृग द्विजाश्च बहवो रूचिरामधरस्वरः ।।1

महाभारत [illegible]

अर्था [illegible] क स्थान है। [illegible] नही आ सकते। यहा [illegible] भूख, प्यास तथा व्याधियाँ नहीं पनप सकती, लोग हजारों वर्षों तक जीते हैं। यहाँ वर्षा नही होती क्योंकि यहाँ पानी प्रचुर है, यहाँ काल का कोई काम नही"

हिमालय भू-भाग का भारतीय उपमहाद्वीप में

कुंभ पर विशेष

अदृश्य नहीं हैं त्रिवेणी की सरस्वती

डॉ वसुंधरा उपाध्याय

सरस्वती को सामान्य परंपरा में अदृश्य कहा जा रहा है किंतु वस्तुतः ऐसा नहीं है। मां सरस्वती हैं इसीलिए प्रयागराज में त्रिवेणी का पवित्र संगम है। इसीलिए इस पवित्र संगम तट पर कुंभ और महाकुंभ भी हैं। इसके लिए आवश्यक है कि अपनी इस विलुप्त कही जाने वाली माता की तेजस्वी धारा की तलाश की जाय और इसके इतिहास का अध्ययन किया जाय। आज के वैज्ञानिक युग में यह असंभव नहीं है। यद्यपि भारत का साहित्य बहुत प्रमाणों के साथ सरस्वती की गाथा गा रहा है फिर भी सामान्य परंपरा में इसे विलुप्त कहा जा रहा है जो उचित नहीं है। सरस्वती की चर्चा वेदों में भी है। इसे प्लाक्ष्वती,वेद्समृति, वेदवती भी कहते है! ऋग्वेदमें सरस्वती का अन्नवती तथा उदकवती के रूप में वर्णन आया है। यह नदी सर्वदा जल से भरी रहती थी और इसके किनारे अन्न की प्रचुर उत्पत्ति होती थी।

“ महाभारत में सरस्वती नदी के प्लक्षवती नदी, वेदस्मृति, वेदवती आदि कई नाम हैं।महाभारत, वायुपुराण अदि में सरस्वती के विभिन्न पुत्रों के नाम और उनसे जुड़े मिथक प्राप्त होते हैं। महाभारत के शल्य-पर्व, शांति-पर्व, या वायुपुराण में सरस्वती नदी और दधीचि ऋषि के पुत्र सम्बन्धी मिथक थोड़े थोड़े अंतरों से मिलते हैं। ”

प्रयागराज में त्रिवेणी का संगम इसलिए है क्योंकि माता सरस्वती नदी भी उपस्थित हैं। सरस्वती को सामान्य परंपरा में अदृश्य कहा जा रहा है किंतु वस्तुतः ऐसा नहीं है। मां सरस्वती हैं इसीलिए प्रयागराज में त्रिवेणी का पवित्र संगम है। इसीलिए इस पवित्र संगम तट पर कुंभ और महाकुंभ भी हैं। इसके लिए आवश्यक है कि अपनी इस विलुप्त कही जाने वाली माता की तेजस्वी धारा की तलाश की जाय और इसके इतिहास का अध्ययन किया जाय। आज के वैज्ञानिक युग में यह असंभव नहीं है। यद्यपि भारत का साहित्य बहुत प्रमाणों के साथ सरस्वती की गाथा गा रहा है फिर भी सामान्य परंपरा में इसे विलुप्त कहा जा रहा है जो उचित नहीं है। सरस्वती की चर्चा वेदों में भी है। इसे प्लाक्ष्वती,वेद्समृति, वेदवती भी कहते है ! ऋग्वेदमें सरस्वती का अन्नवती तथा उदकवती के रूप में वर्णन आया है। यह नदी सर्वदा जल से भरी रहती थी और इसके किनारे अन्न की प्रचुर उत्पत्ति होती थी। कहते हैं, यह नदी हिमाचल में सिरमौरराज्य के पर्वतीय भाग से निकलकर अंबाला तथा कुरुक्षेत्र,कैथल होती हुई पटियाला राज्य में प्रविष्ट होकर सिरसा जिले की दृशद्वती (कांगार) नदी में मिल गई थी। प्राचीन काल में इस सम्मिलित नदी ने राजपूताना के अनेक स्थलों को जलसिक्त कर दिया था। यह भी कहा जाता है कि प्रयाग के निकट तक आकर यह गंगा तथा यमुना में मिलकर त्रिवेणी बन गई थी। कालांतर में यह इन सब स्थानों से तिरोहित हो गई, फिर भी लोगों की धारणा है कि प्रयाग में वह अब भी अंतःसलिला होकर बहती है। मनुसंहिता से स्पष्ट है कि सरस्वती और दृषद्वती के बीच का भूभाग ही ब्रह्मावर्त कहलाता था। सरस्वती नदी सभी सनातन ग्रन्थों तथा ऋग्वेद में वर्णित मुख्य नदियों में से एक है। ऋग्वेद के नदी सूक्त के एक मंत्र (१०.७५) में सरस्वती नदी को 'यमुना के पश्चिम' और 'सतलुज के पूर्व' में बहती हुई बताया गया है। उत्तर वैदिक ग्रंथों, जैसे ताण्डय और जैमिनीय ब्राह्मण में सरस्वती नदी को मरुस्थल में सूखा हुआ बताया गया है, महाभारतमें भी सरस्वती नदी के मरुस्थल में 'विनाशन' नामक जगह पर विलुप्त होने का वर्णन आता है। महाभारत में सरस्वती नदी के प्लक्षवती नदी, वेदस्मृति, वेदवती आदि कई नाम हैंमहाभारत, वायुपुराण अदि में सरस्वती के विभिन्न पुत्रों के नाम और उनसे जुड़े मिथक प्राप्त होते हैं। महाभारत के शल्य-पर्व, शांति-पर्व, या वायुपुराण में सरस्वती नदी और दधीचि ऋषि के पुत्र सम्बन्धी मिथक थोड़े थोड़े अंतरों से मिलते

(लेखिका सनातन चिंतक, अध्येता और हिंदी विभाग, सरदार भगतसिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रूद्रपुर, उधमसिंह नगर,उत्तराखंड में आचार्य हैं)

हिंदी कविताओं से चुनौती दी और ऐसा रस पैदा किया कि सीधे लोगों के दिल में उतर गए। उनके गीत 'तुम कल्पना करो' सुनकर एक बार सायना बानो की मां और प्रसिद्ध अभिनेत्री नसीम बानो ने कहा था, मैं तो मानती थी उर्दू और फारसी ही दुनिया की सबसे मीठी जुबान है, लेकिन नेपाली जी की कविता सुनकर कह सकती हूं कि दुनिया की सबसे मीठी जुबान हिंदी है। विख्यात छायावादी लेखक जयशंकर प्रसाद और उपन्यास सम्राट प्रेमचंद सरीखे शब्द शिल्पियों ने भी उनकी मुक्तकंठ से सराहना की। कहते हैं प्रेमचंद ने तो उन्हें इतना तक कह दिया था कि क्या मां के पेट से ही कविता सीखकर पैदा हुए थे।

फिल्म निर्माण में नाकाम रहे

गीतकार के रूप में स्थापित होने के बाद उन्होंने फिल्म निर्माण की दिशा में कदम रखा और हिमालय फिल्म्स और नेपाली पिक्चर्स फिल्म कंपनी बनाई। इसके बैनर तले उन्होंने नजराना (1949), सनसनी (1951) और खूशबू (1955) जैसी फिल्मों का निर्माण किया, लेकिन नहीं चल पाई और उन्हें आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा।

सैनिकों के बीच जाकर काव्यपाठ किया

ओजस्वी गीत और कविता लिखने वाले जीएस नेपाली जी की 1962 के भारत-चीन युद्ध के समय लिखी कविता खासी चर्चित हुई थी, जिसमें उन्होंने चीन की साजिशों की ओर इशारा करते हुए भारत के सपूतों को मातृभूमि की रक्षा का आह्वान किया था। जज्बा ऐसा कि सीमा पर सैनिकों के बीच जाकर काव्यपाठ किया था।

हम भाई समझते जिसे दुनिया से उलझ के
वह घेर रहा आज हमें बैरी समझ के
चोरी भी करे और करे बात गरज के
बर्फ में पिघलने को चला लाल सितारा।
चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा।

हालांकि उनकी इस कविता को बाद में प्रभात कुमार माथुर ने पूरा किया था।

देखा देखी जी न सके....

इतना नाम और यश कमाने के बाद भी उन्हें वह सम्मान नहीं मिला, जिसके वे हकदार थे। ये टीस उनकी इस कविता में दिखी-

अफसोस नहीं हमको जीवन में कु कर न सके।
झोलियां किसी की भर न सके, संताप किसी का हर न सके।।
अपने प्रति सच्चा रहने का
जीवन भर हमने यत्न किया।
देखा देखी हम जी न सके,
देखा देखी हम मर न सके।

लोकांचल में सहज स्वर और संस्कार

-डॉ. बसुन्धरा उपाध्याय

लोकजीवन में धर्म को एक आलौकिक शक्ति के रूप में स्वीकारा गया है। धर्म के आलौकिक स्वरूप के कारण ही व्यक्ति के हृदय में उसके प्रति विश्वास की गहरी जड़ें जम गईं। समाज ने धर्म के नियम को शाश्वत समझकर ही उनका पालन किया। जीवन के विभिन्न सोपानों को पार करते हुते मानव के जीवन का धर्म आवश्यक अंग बन गया है।

हर पक्ष और पथ धर्म सम्मत

लोक जीवन सदैव धर्म से ओत-प्रोत दिखाई देता है। उत्तराखंड का प्रत्येक पक्ष धर्म से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। धर्म से आप्लावित पहाड़ शैव, शाक्त, वैष्णव, नाथयोग, कबीर आदि अनेक धार्मिक मत मतांतर दिखाई देते हैं। शिव के विभिन्न देवालय शैव मत की पुष्टि करते हैं। लोक जीवन मे भैरों, घण्ड्याल, बिनसर आदि देव शिव रूप में पूजे जाते हैं। यह प्रदेश शिखरों वाला है। उच्च शिखरों पर देवी निवास करती हैं। देवी, काली सुरकंठा, चन्द्रबदनी, ज्वालपा, कंसमर्दनी आदि रूपों में इसकी पूजा होती है।

यहां वैष्णव मत भी अपना महत्व रखता है। बद्री विशाल, योग ध्यान बद्री, भविष्य बद्री, ध्यान बद्री आदि रूपों में विष्णु मंदिर उत्तराखंड में मिल जाते हैं। वैसे भी वैष्णव धर्म ने जन जन को प्रभावित किया है। उत्तराखंड में अधिकतर शिव और देवी का पूजन और अनुष्ठान ही करते हैं।

विश्वास ही लोक का आधार

लोकजीवन नैतिकता से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है दूसरी ओर विश्वासों के अभाव में लोक की कल्पना भी नही की जा सकती। उत्तराखंड का लोकसाहित्य में विविधताओं के रंग से सराबोर है। वैदिक परम्परा अनुसार उत्तराखंड में सभी संस्कार महत्व रखते हैं। सभी के साथ लोकाचार और स्थानीय या सामुदायिक व्यवहार भी जुड़े मिलते हैं और वे हर संस्कार को समृद्ध बनाते हैं। जन्म, नामकरण, अन्नप्राशन,

उनके भीतर कहीं सुलग रही थी। वो गैर बराबरी पर आधारित वर्तमान व्यवस्था को मानने को तैयार नही थे।और अस्पृश्यता को उखाड़ फेकना चाहते थे। बाबासाहेब भली-भांति जानते थे कि हक मांगने से नहीं मिलता है बल्कि अधिकार पूर्वक हासिल करना होता है और अधिकार प्राप्त करने के लिए पहले उसका अधिकारी

हितों की चिंता की।

हरेक वर्ग की चिंता करने वाले शख्सियत के रूप में वर्णन करने का सीधा सरल आशय ही यह है कि बाबासाहेब को किसी वर्ग विशेष के नेता नहीं थे। महिला, मजदूर और किसानों के हितों के लिए उन्होंने

प्रकाश प्रदीप्त कर गया जो दिग दिगंत तक पीढ़ियों को आलोकित करता रहेगा। ०

दीपक निषाद
(आकाशवाणी सागर से सम्बद्ध हैं)
मो. ९८२६९६३७९२

बाबासाहेब आंबेडकर का वास्तविक अवदान

बाबासाहेब ने शिक्षा के दम पर असँख्य बच्चों का भविष्य सँवारा था। पुरुषों के शिक्षा के साथ साथ महिलाओं की शिक्षा को भी बहुत जरूरी मानते थे। वह कहते हैं कि 'बहुत जल्द भारत प्रगति की दिशा स्वयं तय करेगा। लेकिन इस चुनौती को पूरा करने से पहले हमें भारतीय स्त्रियों की शिक्षा की दिशा में कदम उठाने होंगे।'

किसी समाज की तरक्की इस बात से देखता हूँ कि वहाँ की महिलाओं ने कितनी तरक्की की है९ महिलाओं के उत्थान के लिए डॉ. साहेब कितने गम्भीर थे यह बताने के लिये उनका यह कथन ही काफी है।

संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में हम सभी जानते हैं। हमारे संविधान में नागरिकों को बराबर का अधिकार दिया गया है। कोई छोटा है न कोई बड़ा। सब बराबर है। डॉ. आंबेडकर महिलाओं की उन्नति के प्रबल पक्षधर थे। महिला सशक्तिकरण के लिये उन्होंने कदम बढ़ाया। उनका मानना था कि किसी भी समाज का मूल्यांकन इस बात से किया जाता है कि उसमें महिलाओं की क्या स्थिति है? दुनिया की लगभग आधी आबादी महिलाओं की है, इसलिए जब तक उनका समुचित विकास नहीं होता कोई भी देश चहुंमुखी विकास नहीं कर सकता। डॉ. आंबेडकर का महिलाओं के संगठन में अत्यधिक विश्वास था। उनका मानना था कि अगर महिलाएं एक हो जाएं तो इस समाज को सुधारने के वह क्या नहीं कर सकती? महिलाओं और बच्चों को शिक्षित किया जाय आंबेडकर जी ने सदैव इसी बात पर बल दिया। उनका मानना था कि उन्हें महत्वकांक्षी बनाएं न कि निर्बल। वह कहते थे कि उनके मन मे यह बैठाओ कि महान बनना उनकी नियति है। उनका मानना था कि जो व्यक्ति त्याग करता है वह महान होता है।

शायद हमें यह भी ज्ञात नहीं कि महिलाओं को प्रसव के दौरान उन्हें अवकाश मिलना चाहिए इसकी मांग सर्वप्रथम आंबेडकर जी ने ही उठायी थी।

१९५१ में हिंदु कोड बिलसंसद में पेश किया।

उनका मानना था कि सही मायनों में प्रजातंत्र तब आएगा जब महिलाओं को पैतृक सम्पत्ति बराबर की हिस्सेदारी हो। उनका कहना था जब तक महिलाओं को परिवार और समाज मे बराबर का दर्जा नहीं मिलेगा तब तक उनकी उन्नति सम्भव नहीं।

शिक्षा और आर्थिक तरक्की से वह समाज में अपना एक अच्छा ओहदा पा सकती हैं। उनका कहना था कि हिन्दू बिल में महिलाओं का विशेष ध्यान रखा गया है- बहुत सी ऐसी स्त्रियां हैं जो पतियों द्वारा छोड़ दी गयी हैं उन्हें सहायता के तौर पर मात्र ४ से ५ रुपये दिए जाते हैं। वह अपने घर में नौकर की भांति दिन रात कार्य करती हैं फिर भी समाज उन्हें इज्जत नहीं देता। उनके माता पिता उन्हें देखकर शोकसंतप्त रहते हैं।

बाबासाहेब का करुणामय हृदय ऐसी स्त्रियों की करुणा गाथा सुनकर मन व्याकुल हो उठता था।

पर जब कभी कोई क्रांतिकारी अपनी आवाज बुलंद करता है तो उसके खिलाफ आवाज भी उठायी जाती है। वह बिल भी पारित नहीं हुआ। परन्तु वही बिल फिर अलग अलग नामों से पारित हुआ।

उनका सपना २००५ में साकार हुआ। जब संयुक्त परिवार में पुत्री को भी पुत्र की भांति बराबर का भागीदार माना गया। कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह विवाहित है या अविवाहित। आज प्रत्येक लड़की को अधिकार प्राप्त है।

भारत मे जब नारीवाद का कोई नाम भी नही जानता था उस समय बाबासाहेब ने नारी सशक्तिकरण के ऐसे कार्य किये जो आज भी याद भी किये जाते हैं। अगर उस समय महिलाओं के उत्थान की बात अगर नहीं होती तो आज हम यहाँ न होते। महिलाएं अंतरिक्ष में न होती।

अमेरिका जैसे देश मे भी १९८७ में कोर्ट के दखल के बाद महिलाओं को मेटरनिटी लीव का रास्ता साफ हुआ।

गर्भवती कामकाजी महिलाओं को अवकाश

१० नवम्बर, १९३८ को बाबासाहेब ने बॉम्बे लेजिस्लेटिव असेम्बली में महिलाओं की समस्या से जुड़े मुद्दों को उठाया। प्रसव के दौरान स्वास्थ्य से जुड़ी समस्या को सभी सामने रखा। आप १९४२ में सबसे पहले 'मेटरनिटी बेनिफिट बिल' लाये। इसके बाद १९४८ में 'इम्प्लॉई स्टेट इंसोरेंस एक्ट' के जरिये भी महिलाओं को मातृत्व अवकाश की व्यवस्था की गई। यह कार्य आपने उस समय कर दिया जब सबसे ताकतवर मुल्क भी इस मामले में सबसे पीछे थे।

नारी शिक्षा

बाबासाहेब शिक्षा का महत्व बखूबी जानते थे।

बाबासाहेब ने शिक्षा के दम पर असंख्य बच्चों का भविष्य संवारा था। पुरुषों के शिक्षा के साथ साथ महिलाओं की शिक्षा को भी बहुत जरूरी मानते थे। वह कहते हैं कि 'बहुत जल्द भारत प्रगति की दिशा स्वयं तय करेगा। लेकिन इस चुनौती को पूरा करने से पहले हमें भारतीय स्त्रियों की शिक्षा की दिशा में कदम उठाने होंगे।'

लैंगिक समानता (महिला पुरुष में कोई अंतर नहीं)

बाबासाहेब ने अपने संविधान में लिखा है कि 'किसी भी महिला को सिर्फ महिला होने की वजह से किसी अवसर से वंचित नही रखा जाएगा और न ही उसके साथ लिंग के आधार पर कोई भेदभाव किया जा सकता है'। इसके अलावा महिलाओं के कल्याण के लिये अनेक प्रस्ताव रखे। इसके अलावा महिलाओं की खरीद फरोख्त और शोषण के विरुद्ध भी बाबासाहेब ने कानूनी प्रावधान किये।

मताधिकार (वोट देने का अधिकार)

२०वीं शताब्दी के आधे हिस्से में दुनिया भर में बहुत आंदोलन हुये। परन्तु भारत में महिलाओं के मताधिकार के लिये अधिक अधिक आंदोलन नहीं हुए। क्योंकि बाबासाहेब ने अपने संविधान में महिलाओं को समान अधिकार दिया था। हमारे संविधान में १८ वर्ष की महिलाएं वोट देने का अधिकार रखती हैं।

तलाक सम्पत्ति और बच्चा गोद लेने का अधिकार- स्त्री पुरुष के बीच असमानता की गहरी खाई पाटने का उन्होंने सार्थक प्रयास किए। संवेधानिक स्तर पर भी महिला हितों की रक्षा का प्रयास किया। उस बिल के ४ प्रमुख अंग हैं-

१ हिंदुओं में बहु विवाह की प्रथा को समाप्त करके केवल एक विवाह का प्रावधान जो विधिसम्मत हो।

२- महिलाओं को सम्पत्ति में बराबर का अधिकार और बच्चा गोद लेना।

३-पुरुषों के समान स्त्री को भी तलाक का अधिकार हिन्दू समाज मे पहले पुरुष ही तलाक दे सकते थे।

४ आधुनिक और प्रगतिशील विचारधारा के अनुरूप समाज को एकीकृत करके उसे मजबूत करना।

महिला विरोधी कुरीतियों को समाप्त करना- असहाय महिलाओं को उठकर लड़ने की प्रेरणा देने के लिये बाल विवाह और देवदासी प्रथा जैसे घटिया प्रथाओं के खिलाफ आवाज उठाई। १९२८ में मुंबई में अखिल भारतीय दलित महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग २५ हजार महिलाओं ने उसमें भाग लिया। उस समय इतनी भीड़ का एकजुट होना ही अपने आप मे काफी है।

महिलाओं की भलाई के कार्य जितने बाबासाहेब ने किये उतने शायद ही किसी ने किये हों। उनकी दूरदर्शिता का अंदाजा आप इसी बात से लगा सकते हैं जब भारतीय समाज महिलाओं को घर की चार दिवारी में कैद रखे हुए था तब उन्होंने कामकाजी महिलाओं के लिये मैटरनिटी लीव दिलायी।

अतः अंत मे बस यही कहूंगी कि बाबा आंबेडकर किसी एक समुदाय के नेता नहीं हैं। वह महिलाओं के साथ वह समस्त शोषित वर्ग की आवाज थे। वह अंखड भारत के नेता थे। ०

डॉ. बसुन्धरा उपाध्याय
एल.एस.एम. राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय पिथौरागढ़ उत्तराखंड
सचलभाष- ९४१०७००८५३
basu1577@gmail.com

चर्चा में दिलीप म्हस्के और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस फॉर सोशल जस्टिस

डॉ. कन्हैया त्रिपाठी

अपनी धरती का वह इंसान जो भारत की शान में जीवन भर लड़ाई लड़कर शोषितों और वंचितों की आवाज उठता रहा उसका नाम बहुत आदर के साथ लोग लेते हैं और वे हैं-बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर। उन पर फख्र भारतीय इसलिए करते हैं क्योंकि उन्होंने निःस्वार्थ होकर उन लोगों के लिए काम किया जिन्हें समाज में सम्मान दुर्लभ था। अब उनकी बात संयुक्त राष्ट्र में हो रही है। भारतीय मूल के दिलीप म्हस्के एक ऐसे बाबासाहेब के विचारों के लिए कार्य करने वाले श्रेष्ठ व्यक्तित्व हैं जो फाउंडेशन फॉर ह्यूमन होरिजन के माध्यम से दुनिया के लोगों को उनकी १३२वीं जयंती पर संयुक्त राष्ट्र में विगत कई वर्षों से बुलाकर परिचर्चा करा रहे हैं। यह बाबासाहेब के अपने संकल्प का ही परिणाम है कि 'जय भीम' के नारे सुनकर दुनिया के लोगों की उपस्थिति यह समझने में जुट गयी कि जय भीम लोग छुआछूत और अस्पृश्यता के सवाल हैं, उससे मुक्ति दिलाकर नई सामाजिक संरचना स्थापित कर सकें।

राजदूत रुचिरा काम्बोज भारतीय राजनयिक हैं और वह संयुक्त राष्ट्र में आजकल पदस्थ हैं उन्होंने जोर देकर कहा कि यह समय टिकाऊ विकास के २०३० एजेंडा को मजबूती प्रदान करने का है जिससे सर्वजन के लिए सामाजिक व आर्थिक प्रगति सुनिश्चित की जा सके। वह यह समझती हैं कि बिना सामाजिक आर्थिक संबल प्राप्त किए कोई भी बड़ी उपलब्धि हासिल नहीं की जा सकती इसलिए उन्होंने इस पर बलपूर्वक कहा। सबसे अहम बात यह थी कि इस पूरे संवाद में कुछ ऐसी चीजों को रेखांकित किया गया जो आज पूरी दुनिया को समझने जानने की आवश्यकता है। खासकर, ऐसे लोकतांत्रिक सिद्धान्तों को प्रोत्साहन देने में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) समेत उन प्रौद्योगिकीय नवाचारों और प्रथाओं की भूमिका को रेखांकित किया गया, जो एक समावेशी, आंकलन किया जा सकता है कि वह किस प्रतिबद्धता के साथ बाबासाहेब से प्रभावित हैं और वह किस प्रकार सामाजिक आंदोलन की शक्ल इसे देते जा रहे हैं। उनकी आंबेडकरवादियों के साथ वे उस लक्ष्य को हासिल करने के लिए कार्य कर रहे हैं जिसे बाबासाहेब आजादी के बाद तक स्थापित करने की कोशिश करते रहे।

दिलीप म्हस्के की संयुक्त राष्ट्र मंच पर आंबेडकर जयंती मनाने की पहल को इस प्रकार नहीं देखा जाना चाहिए कि यह महज कार्यक्रम है बल्कि इससे यह संदेश गया है दुनिया भर में कि आज विश्व को जरूरत क्या है। इस दृष्टि से भी इस कार्यक्रम में शामिल महत्त्वपूर्ण लोगों ने यह स्वीकारना शुरू कर दिया और कहा भी कि बाबासाहेब के मूल्यों को सतत बनाए रखने की आवश्यकता है तो यह दिलीप म्हस्के के प्रयासों की एक प्रकार से सराहना है। हिंदुस्तान के लोग दुनिया में बिखरे हुये हैं

शिवधाम: पाताल भुवनेश्वर

डॉ. बसुन्धरा उपाध्याय

प्रकृति की इस भू-भाग पर अपार कृपा है। प्राकृतिक संसाधनों से यह क्षेत्र सुसम्पन्न है। यहाँ के घने जंगलों से प्राप्त लकड़ी पर आधारित उद्योग-धंधों से भी इस राज्य की स्थिति अच्छी हो सकती है। यहाँ की खनिज सम्पदा पर आधारित उद्योगों एवं कल-कारखानों से आर्थिक विकास को उच्चतर सोपानों तक पहुँचाया जा सकता है। इसके पर्वतीय भू-भाग में हजारों प्रकार की औषधीय जड़ी-बूटियां पायी जाती है। उन्हें भी एक उद्योग के रूप में विकसित किया जा सकता है। यहाँ पर आजीविका के कई परम्परागत व्यवसाय है, उन्हें वैज्ञानिक विधि से और अधिक लाभकारी बनाया जा सकता है तथा कई अन्य लघु एवं कुटीर उद्योग-धंधों को व्यापक पैमाने पर विकसित कर आजीविका के पर्याप्त साधन जुटाये जा सकते है जिससे गरीबी,बेरोजगारी, पलायन एवं पिछडेपन को दूर किया जा सकता है। इन सभी कार्यों को धरातल पर लाने का प्रयत्न भी किया जा रहा है। उत्तराखण्ड के धार्मिक स्थलो एवं इसके प्राकृतिक वैभव के कारण यह क्षेत्र हमेशा से श्रद्धालुओं और पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। यहाँ की प्राकृतिक सुषमा अतुलनीय है। यहाँ केबद्रीनाथ-कंदारनाथ-यमुनोत्री गंगोत्री जैसे विश्व प्रसिद्ध धार्मिक स्थल तथा नैनीताल कौसानी जैसे विश्वप्रसिद्ध पर्यटन स्थल देश-विदेश के शैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

'प्राचीन काल से ही यह हिमालयी क्षेत्र देवी-देवताओं की वासस्थली एवं ऋषि-मुनियों, साधु-सन्तों की तपस्थली रहा है। पतितपावनी गंगा नदी की तरह यहीं से ज्ञान एवं धर्म की निर्मल धारा भी प्रवाहित होती रही है। आदि शंकराचार्य से लेकर विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, महात्मा गाँधी आदि अनकों महापुरुषों ने अपने जीवन के स्वर्णिम पल उत्तराखण्ड की भूमि में बिताए हैं। यहाँ स्थित हजारों मन्दिर इस बात के प्रमाण है कि यह भू-भाग वास्तव में देवभूमि है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार स्वर्ग के लिए रास्ता भी यहीं से होकर गुजरता है। इदं वै स्वर्गगमनं न पृथ्वीं तामहो विभो।'महाभारतकालीन मान्यतानुसार पाण्डवों ने यहीं से स्वर्गारोहण किया था।

धर्म और संस्कृति का प्रमुख केन्द्र होने के साथ ही यह पर्वतीय भू-भाग दीन-दुखियों एवं शरणार्थियों की भी प्रमुख शरणस्थली रहा है। मुगलों के आक्रमणों से लेकर भारत-पाक विभाजन की त्रासदी तक हजारों बेसहारा लोगों ने देश के अलग-अलग भागों से पलायन कर उत्तराखण्ड की भूमि में शरण ली है।कुछ लोग धार्मिक भावना से अनुप्राणित होकर अथवा शान्तिपूर्ण जीवन यापन करने की दृष्टि से भी यहाँ आकर रहने लगे. यही कारण है कि अतीत से लेकर वर्तमान तक यहाँ विभिन्न धर्मों, जातियों एवं समुदायों के लोगों का समय-समय पर आवागमन होता रहा है।

इतिहासकारों का मानना है कि प्रारम्भ में यक्ष, गन्धर्व, नाग, हूण कोल किरात कुणिन्द तंगण, खश, वैदिक आर्य तथा कत्यूरी आदि समय-समय पर विभिन्न मार्गों से होकर यहाँ आए।इनमें से कई जातियों के अवशेष आज भी विभिन्न नाम-रूपों में प्राप्त है। यहाँ पाये जाने वाले यक्ष और नाग मन्दिर इस बात के प्रमाण है कि अतीत में कभी इन जातियों का यहीं प्रभुत्त्व रहा होगा। हूणों के अवशेष भोटिया, कोल के अवशेष शिल्पकार (दलित), किरात के अवशेष राजी (वनरीत), कुणिन्द तमण खश, शक तथा आर्यों के अवशेष तथाकथित उच्च-निम्न श्रेणी के ब्राह्वाणों एवं क्षत्रियों के रूप में देखे जा सकते हैं।इस राज्य में जल-सम्पदा प्रचुर मात्रा में है। गंगा तथा यमुना के अतिरिक्त यहाँ की प्रमुख नदियाँ - भागीरथी, अलकनन्दा, मन्दाकिनी, पिण्डर, धौली गंगा, टॉस, यमुना, काली, भिलंगना, सरयू, रामगंगा आदि हैं। विद्युत उत्पादन में यह प्रदेश बहुत आगे है। टिहरी बाँध इसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है जो भागीरथी और भिलंगना नदियों के संगम पर बना है।इस बाँध की ऊँचाई 260.5 मीटर (855 फीट) है, जो इसे विश्व का पाँचवा सबसे ऊँचा बाँध बनाती है।

नगाधिराज हिमालय की गोद में स्थित उत्तराखण्ड राज्य अपने प्राकृतिक सौन्दर्य, गगनचुम्बी हिमशिखरों, दूर-दूर तक फैली पंचाचूली, नन्दा, त्रिशूल आदि पर्वत श्रृंखलाओं, गुफा-गह्वरों, उपत्यकाओं, घने जंगलों, विस्तीर्ण चरागाहों (बुग्यालों) झील-झरनों, गंगा-यमुना आदि पावन नदियों के उद्गम स्थलों तथा अनगिनत पहाड़ी नदियों, लहलहाते खेतों एवं हरी-भरी वादियों के रूप में अपनी मनोरम छटा बिखेरते हुए, पर्वत पठार से मैदानी क्षेत्र के विस्तृत भू-भाग में फैला हुआ है।

यह राज्य सम्पूर्ण भारतवर्ष की प्राचीन धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, भाषायी, साहित्यिक और सांस्कृतिक धरोहर को संजोये हुए है तथा आज तक अक्षुण्ण रखे हुए है, जो निश्चय ही उस युग की वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला तथा पुरातत्व का प्रत्यक्ष ज्ञान प्रस्तुत करता है।इस सुरम्य प्रदेश को "देवभूमि भी कहा जाता है क्योंकि यह प्राचीन काल से देवों की वासस्थली रही है, बद्रीनाथ, केदारनाथ आदि ऐसे ही पावन देव-स्थान है। यहाँ के प्रत्येक पर्वत श्रृंग पर किसी न किसी देवी-देवता का वास माना जाता है। यह भारत के ऐसे भूखण्डों में से है, जिसका अपना समृद्ध इतिहास रहा है। इसके क्रमबद्ध और स्पष्ट इतिहास जानने के साधनों का अभाव होते हुए भी विद्वानों ने अत्यधिक लगन एवं परिश्रम के द्वारा इसका इतिहास खोज निकालने का महती प्रयास किया है।

इस हिमालय पर्वत श्रेणी की प्रशंसा में संस्कृत के कविकुल शिरोमणि महाकवि कालिदास ने "कुमारसम्भवम्" महाकाव्य में वर्णन करते हुए लिखा है कि समस्त पर्वतों का राजा हिमालय देवताओं की आत्मा के समान उत्तर

देवभूमि का धार्मिक अवलोकन

डॉ. बसुन्धरा उपाध्याय

इस पावन प्रदेश के निष्कलुष सौन्दर्य को शब्दों में बाँध पाना दुष्कर है। बस यही कहा जा सकता है-अद्भुत इन्द्रजाल, अतुलनीय सौन्दर्य। एक ओर श्री बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री जैसे सुप्रसिद्ध चारधाम, कुम्भनगरी हरिद्वार, तथा ऋषिनगरी ऋषिकेश जैसे धार्मिक-आध्यात्मिक नगर इस क्षेत्र को विश्व के धार्मिक पर्यटन स्थलों के मानचित्र में विशिष्ट स्थान प्रदान करते हैं।

हमारा सौभाग्य है कि हमारा देश पर्यटन के लिए एक बहुत ही विशाल एवं आकर्षक क्षेत्र है। भारत की अपनी विशिष्ट प्राचीन संस्कृति है। हमारे मन्दिरों में हमारे अद्वितीय सौंदर्य के दर्शन होते है। विभिन्न प्राकृतिक सौन्दर्य जैसे - हिमाच्छादित पर्वत शिखर, हिमनद गर्मजल के स्रोत झरने, विचित्र चमत्कारिक गुफाएं, अविस्मरणीय धार्मिक स्थल एवं मन्दिर इत्यादि हजारों वर्षों से हमारी ऐतिहासिक परंपरा आज भी सुरक्षित हैं। इन सब के अतिरिक्त हमारा देश खान-पान, रहन-सहन, पर्व-त्योहारों एवं मेलों के लिए भी आकर्षण रखता है। पर्यटकों के लिए यहां जितने आकर्षक स्रोत हैं, जितने शायद ही दुनिया के किसी अन्य देश में हो। इस समाज के विकास के लिए परिवर्तन अति आवश्यक है। परिवर्तन के लिए विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों का संपर्क में आना भी महत्वपूर्ण है। समाज में मनुष्य के खान-पान, रहन-सहन, तीज-पर्व, पहनावा इत्यादि अधिकांशतः धर्म पर आधारित होते हैं। धार्मिक पर्यटन की मदद से धर्मों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पनपता है, एवं समाज में सभी एक दूसरे की संस्कृति को समझने तथा आत्मसात करने का भरसक प्रयास करते हैं।

आज संसार के अनेक समुदाय एक दूसरे के परिधानों का अनुसरण कर रहे हैं तो इसका 75 प्रतिशत श्रेय धार्मिक पर्यटन को दिया जाता है।धार्मिक पर्यटन का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इसने समाज में पिछड़े और कम विकसित क्षेत्रों की ओर भी विकास की योजनाओं को अग्रसारित किया है तथा दूसरा केन्द्र तथा राज्य, सरकारें भी प्रतिवर्ष नये धार्मिक स्थलों की खोज करके उन्हें पर्यटकों के लिए आकर्षक बनाने हेतु सदैव प्रतिबद्ध है।धार्मिक पर्यटन ने धर्मनिरपेक्षता एवं सार्वभौमिकता के प्रतिमान स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है, क्योकि पर्यटक किसी धर्म विशेष के स्थलों का भ्रमण करने सें अधिक सभी धर्मों से जुड़े धार्मिक स्थलो के दर्शन करने को अधिक प्राथमिकता प्रदान करते हैं एवं धर्मों में व्याप्त समरूपता को समझने के लिए भरसक प्रयास करते हैं।

उत्तराखण्ड की प्राचीन धरोहर को विश्वपटल पर प्रस्तुत करके धार्मिक पर्यटन को अर्थव्यवस्था के रूप में विकसित कर सकते हैंधार्मिक पर्यटन स्थल उत्तरखण्ड के वास्तुकला एवं स्थापत्य कला के महत्वपूर्ण धरोहर के साथ-साथ आगन्तुकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र भी है, जो हमारी प्राचीन

जागेश्वर : भगवान शिव का महामृत्युन्जय स्वरूप

डॉ. बसुन्धरा उपाध्याय

उत्तराखंड अनादिकाल से देवताओं तथा ऋषि-मुनियों की तपोभूमि, यक्ष-किन्नरों की विहारभूमि तथा योगियों की सिद्धभूमि रहा है। कहते हैं कि उत्तर दिशा को देवताओं की दिशा कहा जाता है। महाकवि कालिदास ने नगाधिराज हिमालय की प्रशंसा में लिखा है कि -

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः ।
पूर्वापरी वारिनिधीवगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ।।

पर्वतराज की गरिमा महिमा का तो कहना ही क्या। स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवदगीता में कहा है कि स्थावरों में मैं हिमालय हूँ-

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्येकमक्षरम् ।
यज्ञानां जपयज्ञोस्मि स्थावराणां हिमालयः।। अ. 10/25

हिमालय का अंतः स्वरूप एक ऐसा विषय है जो वर्णनातीत है। यह भारत के मुकुट रूप में तो स्थित है ही, परन्तु उसका एक रूप और भी है। अखिल शास्त्रवेत्ता पुराण प्रणेता व्यासजी की यह तपोभूमि भी है। आदि शंकराचार्य को शाश्वत ज्योति का दर्शन यहीं ज्योतिर्मठ में हुआ। यहीं उन्होंने ब्रह्मसूत्र तथा उपनिषदों आदि पर अपने भाष्यों की रचना की। इस प्रकार हिमाद्रि भारतीय जीवन दर्शन के लिए आध्यात्मिक पीठ के रूप में भी स्थित है, केवल प्रहरी मात्र नहीं। वैदिक ऋषियों से लेकर आधुनिक महात्मा मनीषियों तक के लिए यह प्रेरणास्त्रोत रहा है। उत्तुंग हिमालय विराट भारत की आध्यात्मिक ज्योतिशिखा के रूप में विश्व को आज भी प्रकाश वितरित कर रहा है। इसका कण-कण तीर्थ है। कहते हैं यहां जगदम्बा पार्वती जी तथा भगवान शंकर का नित्य निवास भी है।

रामचरितमानस में लिखा है -

परम रम्य गिरिवर कैलासू। सदा जहां सिव जमा निवासू।

अब हिमालय के अन्तर्गत उत्तराखंड के कुछ तीर्थों की चर्चा करते हैं। हिमालय भारत का मुकुट होने के साथ देश प्रहरी भी है। यह सत्यम शिवम सुन्दरम् का मूल है। यह हिमप्रदेश सृष्टि के आरम्भ से ही सुर-नर-मुनि और ऋषियों की तपोभूमि, साधनाभूमि एवं कर्मभूमि रहा है। आदि शक्ति जगदम्बा का आविर्भाव यहीं हुआ था और हमारे देवाधिदेव भगवान आशुतोष अपने गणों के साथ यहीं विराजते हैं। यह स्वयं में एक तीर्थ है। इसके अनेक शिखर अनेक देवी-देवताओं की कर्मभूमि कहे जाते हैं। हिमालय का प्रत्येक शिखर देवत्व की महिमा से विभूषित है। इसका प्रत्येक मधुर स्पन्दन ईस्वरत्व की अनिर्वचनीय प्रभा से मण्डित है। वेद, पुराण, श्रीमद्भागवत, रामायण और अनेक अर्वाचीन ग्रन्थ इस हिमराज की प्रशस्ति गान करके अपने को श्री सम्पन्न करते हैं और अपना

अहोभाग्य समझते हैं।

हमारे प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों में तीर्थों की महिमा विशेष रूप से गायी गई है। देवताओं की निवासभूमि ही हमारे लिए तीर्थभूमि है और धर्मभूमि है। इन तीर्थों का वर्णन बड़ा ही दिव्य है। भक्तगण इनके पास जाकर इनकी वन्दना करते हैं और श्रद्धा के फूल चढ़ाकर अपनी मनोकामना को पूरी करते हैं। तीर्थ एक व्यापक शब्द है और अनेक वर्षों का द्योतक है। तीर्थ का अर्थ है पार करना। हम यह भी कह सकते हैं कि पापों से पार पाने के लिए हम तीर्थ यात्रा करते हैं या सांसारिक दुखों से मुक्ति पाने के लिए हम ईश्वर की शरण में जाते हैं। आत्मशुद्धि के लिए यह आवश्यक है कि लोग इन तीर्थों का भ्रमण करें, अपने इष्ट देवताओं की अर्चना करें और अपने मंगल के लिए प्रसाद स्वरूप उनके आशीर्वाद को अंगीकार करें। भारतीय मनीषियों ने तीर्थों की महिमा को विशेष रूप से गौरवान्वित करने के लिए सत्य, क्षमा, दया, सरलता, संतोष, ब्रह्मचर्य, मधुर वाणी, ज्ञान, धैर्य, तप एवं आदि को भी तीर्थ की संज्ञा दी है। इन तीर्थों में भ्रमण चिंतन, मनन और व्यक्ति को सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों बलों की प्राप्ति होती है। सारांश यह कि भारतीय तीर्थ, ज्ञान और भक्ति की पृष्ठभूमि है, भाव और विचार को सिद्ध भूमि है तथा अनेक शास्त्र एवं पुराणों की भावभूमि है, भक्तजनों के लिए तीर्थ ही धर्मभूमि है। इस दृष्टि से भी हिमालय की गरिमा और बढ़ जाती है और यह सम्पूर्ण तीर्थों का सिद्धपीठ बन जाता है। सच यही है कि हिमालय लय, प्रलय और महाप्रलय की आश्रयभूमि है। 1

हिमालय के तीर्थ हर दृष्टि से अलौकिक है। जिस प्रकार भारतवर्ष का प्रत्येक व्यक्ति दार्शनिक होता है, ठीक उसी प्रकार हिमालय का प्रत्येक प्रस्तर भी तीर्थ है। हिमालय का कोई भी ऐसा स्थान नहीं है, जो देवत्व एवं ईश्वरत्व की महिमा गरिमा से पूरित न हो।

सहजता और सम्पूर्णता के संत रैदास / डॉ. अमरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव / 117
संत परम्परा में संत रैदास की वैचारिकी / डॉ. टीकमणि पटवारी / 122
लोक में रविदास / ओमप्रकाश चौबे / 128
समरसता एवं मानवीय मूल्यों के संपोषक : रैदास / गौरव चौहान / 131
रैदास के काव्य की प्रासंगिकता / प्रो. अनिल राय / 134
सन्त साहित्य और संत रविदास / डॉ. रमाकान्त राय / 139
संत रैदास और सामाजिक समरसता / डॉ. संध्या द्विवेदी / 143
भक्ति आंदोलन और संत रैदास / डॉ. राजेश कुमार / 148
संत रैदास की सामाजिक चेतना / प्रियंका हास / 154
संत-मत परंपरा और रैदास / प्रो. अलका पांडे / 158
संत रैदास और उनकी वैचारिकी / डॉ. वसुन्धरा उपाध्याय / 161
रैदास के काव्य में श्रम की महत्ता / डॉ. प्रियंका सोनकर / 165

संत रैदास और उनकी वैचारिकी

डॉ. वसुन्धरा उपाध्याय

भक्ति आंदोलन के संतों ने समाज सुधार का जो प्रयत्न किया, वह वास्तव में अनुकरणीय है। इन सभी संतों ने सभी धर्मों में आधारभूत समानता पर बल दिया है। समाज में मानव समता तथा भ्रातृत्व की भावना को प्रोत्साहित किया। सभी जातियों को एक-दूसरे के समीप लाने का प्रयत्न किया है। इन संतों में संत शिरोमणी गुरु रविदास जी एक अनमोल रत्न हैं, जिन्होंने निम्न वर्ग के समाज में जन्म लेकर भी आध्यात्मिकता की उच्चतम चोटी पर पहुँचने का आदर्श स्थापित किया है। उन्होंने निडर होकर सभी जाति और सम्प्रदाय के लोगों के बीच प्रेम और भक्ति का उपदेश दिया। रविदास जी ने सच्चाई और सादगी के आधार पर आध्यात्मिक ज्ञान को अर्जित करके मानव जाति को सही दिशा देने का कार्य किया। संत रविदासजी का साहित्य भारतीय संत साहित्य परम्परा में एक अनमोल कड़ी है। उनका साहित्य साकाजिक जनजागृति एवं राष्ट्र उत्थान के लिए महत्त्वपूर्ण देन है। उनके काव्य में समता, समाज कल्याण तथा सामाजिक-धार्मिक दर्शन होता है। रविदास वाणी प्रबल प्रेरणा का स्रोत है। वाणी में साम्प्रदायिक सद्भाव एवं विश्वबन्धुत्व की भावना का दर्शन होता है। विशेषकर उत्पीड़ित दलित वर्ग को ऊपर उठने की प्रेरणा शक्ति देता है।

संत रविदासजी ने कहा है कि धर्म, वह नहीं है, जो किताबों और ग्रंथों में बँधा रहता है, जो रूढ़ियों और रिवाजों में फँस जाता है, जो मनुष्यों के बीच पाखंड और द्वेष की दीवारें खड़ी करके उन्हें टुकड़ों में तितर-बितर कर देता है। संत रविदासजी ने कथनी और करनी के भेद को मिटाने, सच्चे मार्ग पर चलने, गुरुजनों के प्रति श्रद्धा रखने, सामान्य प्राणियों के लिए दया भाव रखने का जो आदेश दिया है, उसकी उपादेयता आज के संदर्भ में और अधिक बढ़ गई है। गृहस्थ संत होते हुए रविदासजी ने जीवन के यथार्थ को अच्छी तरह से पहचानकर मानवीय समता और आत्म-सम्मान को प्रतिष्ठित किया।

राष्ट्र चेतना में साधुओं की भूमिका / पूजा सक्सेना / 124
थेरीगाथा : बौद्ध भिक्षुणियों के उद्गार / डॉ. विभा ठाकुर / 128
दादूपंथ : परम्परा और इतिहास / डॉ. दयाराम स्वामी / 133
दादूपंथ के नागा साधु / डॉ. रेखा शेखावत / 137
लोक संस्कृति में तितिक्षा / डॉ. भुवनेश्वर दूबे / 140
प्रयागराज के मठ-अखाड़े / प्रो. किरण शर्मा / 147
काशी की शैव-मठ परम्परा / डॉ. उपेन्द्र देव पाण्डेय / 152
नाथ : प्रतीक और बीजशब्द / डॉ. अर्पणा बादल / 155
अघोरपीठ प्रणेता बाबा कीनाराम / अनीस कुमार सिंह / 162
निम्बार्क सम्प्रदाय की आचार्य परम्परा / डॉ. अनिता सोनी / 165
श्रीमद् भागवत में संन्यासी धर्म / डॉ. बसुन्धरा उपाध्याय / 168
दूधाधारी मठ / डॉ. पीसीलाल यादव / 171
आँचलकुण्ड दरबार / डॉ. टीकमणि पटवारी / 174
गंगेसरी मठ : एक परिचय / नीलिमा गुर्जर / 177
समर्थ रामदासी परंपराएँ और इतिहास / डॉ. श्रीकृष्ण काकड़े / 179
वृन्दावन की साधु सखियाँ / डॉ. योग्यता भार्गव / 183
अखाड़ा परम्परा और बच्चू महाराज / डॉ. सत्या सोनी / 186
नागा संन्यासी : परम्परा परिचय / डॉ. अनुपमा श्रीवास्तव / 188
बाउल की रहस्यमय जीवनशैली / डॉ. बामापद बाउरी / 191
वारकरी अखाड़ा परंपरा / सूर्यकांत भगवान भिसे / 193
ज्योति रामलिंग स्वामी : परिचय एवं संदेश / वि. वडिवाम्बिकै / 195

श्रीमद् भागवत में संन्यासी धर्म

डॉ. बसुन्धरा उपाध्याय

भारत वर्ष की साधु परम्परा विश्व विख्यात है। हमारे भारत वर्ष में गृहस्थ और विरक्त दोनों ही रूप में साधु मिल जाते हैं। भारत का प्राचीन गौरवमय इतिहास साधु इतिहास ही है। हमारे जीवन मूल्यों में इतनी शक्ति है कि एक डाकू को ऋषि बना दिया। चिंताओं से मुक्त होकर लोक सेवा का कार्य आज भी संन्यासी जितनी अच्छी तरह से कर सकते हैं उतना कोई और नहीं। साधु संतों की आवश्यकता आज अधिक है। *साधनोति परकार्यमिती साधुः* अर्थात् जो दूसरे का कार्य कर देता है वह साधु है।

गीता के अनुसार जब कोई मनुष्य एक बार भक्तिमार्ग पर चलने लगता है, तब इस जन्म में नहीं तो अगले किसी जन्म में कभी न कभी उसको परमेश्वर के स्वरूप का यथार्थ ज्ञान प्राप्त हो जाता है। भगवान स्वयं कहते हैं –

श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परा शान्ति अविरेणाधिगच्छति।।

अर्थात् श्रद्धावान मनुष्य इन्द्रीय निग्रह द्वारा ज्ञान प्राप्ति का प्रयत्न करने लगता है, तब उसे ब्रह्मात्मैक्यरूप ज्ञान का अनुभव होता है और फिर उस ज्ञान से उसे शीघ्र ही पूर्ण शान्ति मिलती है।

भक्त्या मामभिजानाति यावान् यश्चास्मि तत्वतः।
ततो मां ततवतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम्।।

अनुक्रम

जनजातीय भाषा साहित्य का सौन्दर्य / डॉ. अन्विता अब्बी / 7

स्वामी मनोरथरामजी महाराज 'रामस्नेही' : एक परिचय / ब्रजेन्द्रकुमार सिंहल / 11

लोक आख्यान 'हरदौल' में सांस्कृतिक मूल्य / डॉ. बहादुर सिंह परमार / 23

महाकाव्य की वाचिक परम्परा / महेन्द्र मिश्रा / 28

तुलसा महाराणी / डॉ. सुमन चौरे / 39

मराठी लोकगीतों में रामकथा / प्रो. प्रतिभा मुदलियार / 45

जनजातीय भरावा शिल्प सौंदर्य / डॉ. महेन्द्र भानावत / 51

बुन्देलखण्ड का भूगोल और लोक साहित्य / डॉ. राजेन्द्र सिंह पवार / 56

नयन अयन एवं ईसुरी / डॉ. (श्रीमती) गायत्री वाजपेयी / 62

लोक में राम / भगवती प्रसाद द्विवेदी / 69

लोककलाएँ और शिक्षा / हरीश कुमार शर्मा / 73

फाग का लोकरंग / डॉ. पीसीलाल यादव / 79

लोक देवता: डिग्गी के कल्याणजी / चन्द्रकान्ता शर्मा / 84

डोडगळई : निमाड़ का लोक पर्व / सुधा रानी तैलंग / 86

लोकगीतों में वर्षा / डॉ. उषा श्रीवास्तव / 89

कोल गाथा : लहुरा बाबा / अनुपम दाहिया / 93

बुंदेली लोकोक्तियों में भविष्यवाणियाँ / डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' / 100

जनजातियों का कल्पवृक्ष- महुआ / सुमन साहू /104

परम्परा में वृक्ष-पूजा / शंकरलाल माहेश्वरी /107

लोक देव- हरदौल / डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव / 110

परम्परा में लोक का अर्थ / डुमनलाल ध्रुव / 113

रामलला नहछू : पाठ एवं प्रसंग / डॉ. नरेन्द्रकुमार मेहता / 115

भीलों में ताड़ी, महुआ एवं गल प्रथा / डॉ. धुलसिंह खरत / 117

विद्यापति की भाषा- एक दृष्टि / डॉ. वसुन्धरा उपाध्याय / 121

लोक संस्कृति और साहित्य में आम / उमाशंकर चतुर्वेदी / 125

विद्यापति की भाषा- एक दृष्टि

डॉ. वसुन्धरा उपाध्याय

विद्यापति का जन्म ऐसे समय में हुआ जिसे हम भारतीय भाषाओं का आरंभिक संक्रामण काल कह सकते हैं। उस समय मध्यकालीन आर्य भाषा की अंतिम कड़ी अपभ्रंश भी जनभाषा के स्थान से हट चुकी थी। मुगल आक्रमणों के कारण यद्यपि भारतीय भाषाओं के विकास में त्वरा आ गयी, फिर भी चौदहवीं शताब्दी तक वे इस योग्य नहीं हो पायी थीं कि उनमें उच्च कोटि की काव्यानुभूतियाँ अभिव्यक्त की जा सकें। बहुत से कवि उस समय भी अपभ्रंश भाषा में काव्य लिखते थे, किन्तु जन-सम्पर्क से वंचित हो जाने के कारण इस भाषा में लिखे गये काव्य बहुत अधिक लोकप्रिय न हो सके। स्वयं विद्यापति ने इस स्थिति को भलीभाँति समझा था और उन्होंने अपनी 'कीर्तिलता' में बड़े साफ ढंग से इसका उल्लेख भी किया है-

सक्क्य वाणी बुहअन भावइ
पाउअ रस को मम्म न पावइ
देसिल बअना सब जन मिटठा
तं तैसन जम्पओं अवहठ्ठा।।

विद्यापति उद्भट संस्कृत विद्वान थे। अनेक धुरन्धर पण्डितों ने 'विसइवार बिसपी' मूल के मैथिल ब्राह्मण वंश को अपने जन्म से महिमा मंडित किया था। इस कुल के कर्मादित्य, शिवादित्य, धीरेश्वर, चंडेश्वर, ज्योतिईश्वर आदि विद्वानों की विद्वता बहुत प्रसिद्ध है। विद्यापति के पिता गणपति ठाकुर संस्कृत के सुप्रसिद्ध विद्वान और विख्यात सन्त जयदत्त के सुपुत्र थे। जयदत्त के पिता वीरेश्वर भी स्वयं बड़े विद्वान मनीषी थे। इस विद्वत परम्परा के कारण ही विद्यापति संस्कृत साहित्य के प्रकांड विद्वान हुए। संस्कृत भाषा में उन्होंने

सम्मेलन पत्रिका

(शोध–त्रैमासिक)

भाग	:	११०, संख्या-२
चैत्र-आषाढ़	:	संवत् २०८२
अप्रैल-जून	:	सन् २०२५

प्रधान सम्पादक

कुन्तक मिश्र

सम्पादक

रामकिशोर शर्मा

हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग

१२, सम्मेलन मार्ग, प्रयागराज-३

12:44 PM

विषय-सूची

म्पादकीय

.सं.	आलेख	लेखक	पृष्ठ
	हित्य आलेख		
	भक्ति के उजास में संत रज्जब का काव्य	–प्रो० राजेश कुमार गर्ग	७–१४
	सामाजिक विसंगतियों का दस्तावेज : ग़ज़ल	–डॉ० अशोक कुमार	१५–१९
	प्रवासी मजदूरों की वेदना का दस्तावेज : लाल पसीना	–डॉ० अनिला मिश्रा	२०–२६
	स्वाधीनता आन्दोलन में रामचरितमानस की भूमिका	–डॉ० प्रद्युम्न सिंह	२७–३१
	हड़प्पा सभ्यता की कला-संस्कृति में, धार्मिकता की झलक	–विवेक सुमन शर्मा	३२–३५
	सुमित्रानन्दन पन्त के काव्य में सौन्दर्यांकन	–डॉ० बसुन्धरा उपाध्याय	३६–४१
	राही मासूम रज़ा की रचनाओं में समन्वय और मानवीय संवेदना	–डॉ० ममता खांडल	४२–४९
	आधुनिक कविताई की चुनौतियाँ और अज्ञेय	–डॉ० परम प्रकाश राय	५०–५४
	केदारनाथ अग्रवाल : काव्य में उभरता लोक-मानस	–अजीत कुमार पुरी	५५–६१
	सांस्कृतिक बोध का जीवन्त दस्तावेज : शिवप्रसाद सिंह की कहानियाँ	–डॉ० अजीत सिंह	६२–६५
	शिवकुमार मिश्र एवं हिन्दी आलोचना	–डॉ० सुनीलकुमार बारीआ	६६–७२
	'आज के अतीत' आत्मकथा में झाँकता भीष्म साहनी का व्यक्तित्व	–प्रीति शर्मा	७३–७८
	अनामिका के उपन्यासों में आधी आबादी की संघर्ष	–डॉ० बिजय रवानी	७९–८३

सम्मेलन पत्रिका

(शोध–त्रैमासिक)

भाग	:	१०९, संख्या–२
चैत्र-आषाढ़	:	संवत् २०८१
अप्रैल-जून	:	सन् २०२४

प्रधान सम्पादक

विभूति मिश्र

सम्पादक

रामकिशोर शर्मा

हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग

१२, सम्मेलन मार्ग, प्रयागराज–३

१३. आत्ममुग्ध संस्कृति और निस्संग समाज का आईना : अरुण कमल की कविताएँ	**–डॉ० सन्ध्या मेनन**	७८–८२
१४. मनोविश्लेषण के परिप्रेक्ष्य में महादेवी वर्मा	**–डॉ० बसुन्धरा उपाध्याय**	८३–९२
१५. ब्रजभाषा पाठशाला : स्वरूप और महत्त्व	**–डॉ० अमित कुमार गुप्ता**	९३–९९
१६. दिनकर के काव्य में मानवाधिकारों की तलाश	**–अमन वर्मा 'दीप अमन'**	१००–१०६
१७. २१वीं सदी की नाट्य-लेखिकाओं के नाटकों में स्त्री-विमर्श के विविध परिप्रेक्ष	**–अजीत कुमार सिंह**	१०७–११६
१८. निराला के काव्य में लोक-जीवन की चेतना	**–डॉ० विनय कुमार पाठक**	११७–१२२
१९. भूमण्डलीकरण का दौर तथा उदय प्रकाश की कहानियों में मानवीय संवेदना	**–दीपक कुमार**	१२३–१३०
२०. हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक-चेतना	**–डॉ० मन्जू कोगियाल**	१३१–१३७
२१. सुशीला टाकभौरे की कविताओं में दलित चेतना	**–डॉ० उषा यादव**	१३८–१४२
२२. सतीश जमाली : मधुरेश अन्तःसम्बन्ध	**–शिवशरन द्विवेदी**	१४३–१४८
२३. केदारनाथ सिंह की काव्य-संवेदना : एक अध्ययन	**–सोनम पाण्डेय**	१४९–१५६

मनोविश्लेषण के परिप्रेक्ष्य में महादेवी वर्मा

–डॉ० बसुन्धरा उपाध्याय

कविता को जब मनुष्य गढ़ता है तब वह अपने अन्तस् के भावों को भी उद्‌घटित करता है। महादेवी जी ने भी अपने अंतर्द्वन्द्व को कभी नहीं छिपाया बल्कि सहज रूप से उसकी अभिव्यक्ति करती रहीं। किसी भी साहित्यकार की सर्जन- चेतना पर उसके व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव अवश्य पड़ता है। सर्वविदित है कि महादेवी वर्मा आधुनिक हिंदी काव्य साम्राज्य के मजबूत स्तम्भों में से एक हैं। उनकी काव्य साधना आधुनिक हिंदी कविता की छायावादी धारा का एक मूल्यवान अंग रही है। महादेवी जी का साहित्यिक जीवन अत्यंत गुरुत्व पूर्ण और उदात्त रहा है और यही कारण है कि उनका साहित्य अत्यंत भव्य रूप में प्रकट हुआ है। वे कवि के साथ साथ गद्यकार, आलोचक,चित्रकत्री तथा प्रबुद्ध वक्ता भी थीं। महादेवी वर्मा के जीवन मे सभी प्रकार के रंग प्रतिष्ठित हैं। उनके जीवन में जो वेदना थी उन्हें उसमें आनंद की प्राप्ति होती है। उनकी काव्य कृतियों के परिप्रेक्ष्य से यह स्पस्ट होता है कि उनकी पीड़ा एक आध्यात्मिक सत्य ही है, उनके अस्तित्व के पर्याय भी इसीलिये है कि वह उनकी चिरन्तता का अभिन्न अंग है,[१] (महादेवी वर्मा,यामा पृष्ठ-१०)।

आधुनिक कविता भी सांस्कृतिक जागरण से प्रभावित है। छायावाद में इस चेतना के स्पष्ट दर्शन होते हैं। इन्हीं सांस्कृतिक आन्दोलनों के फल- स्वरूप ही भारतीय दर्शन को नवीन रूप में संप्रेषित किया गया है। छायावादी कविता में इस सांस्कृतिक दर्शन का अन्तर्भाव, प्रसाद में शैव के आनन्दवाद, निराला में वेदान्त, जो रामकृष्ण एवं विवेकानन्द से प्रभावित है, पंत में प्रथमतः सौंदर्यवादी चेतना, फिर मार्क्स, गांधी, और अन्त में अरविन्द दर्शन के रूप में दर्शन होते है। महादेवी भी स्पष्टतः उपनिषदों एवं बुद्ध से प्रभावित हैं। वह निर्वाण की प्राप्ति के लिए प्रेरित करती हैं। वह अपनी कविता में निर्वाण की चर्चा भी करती हैं। इस विषय में कुछ पक्तियां द्रष्टव्य हैं-

सृष्टि का है यह अमिट विधान
एक मिटने में सौ वरदान

× × ×

अमरता है जीवन का ह्रास
मृत्यु जीवन का चरम विकास।[२] (महादेवी वर्मा, यामा, पृष्ठ-८४)

अनुक्रमणिका

1. अपने तईं
   अपनी शर्तों पर जीने वाले कथाकार देवेश ठाकुर - सतीश पांडेय 05-10
2. डॉ. देवेश ठाकुर / जीवन वृत्त 11-16

प्रथम पुण्य तिथि : परिजनों की संस्मृतियों में :

2. बाबा.... - डॉ. आभा नागराल 17-18
3. मेरे नाना...- डॉ. निष्ठा नागराल 19-20
4. सर को जैसा मैंने जाना - डॉ. रोहिणी शिवबालन 21-23

अपूर्ण उपन्यास अंश : देवेश ठाकुर

5. अधूरा-सा कुछ.... 24-41

मित्रों-परिचितों की संस्मृतियों में

6. देवेश ठाकुर : यादों के कुछ बेतरतीब सिलसिले - सूर्यबाला 42-43
7. अब नहीं मिलूँगा तुझे - आशा नैथानी 44-47
8. असीम जिजीविषा का अविस्मरणीय कथाकार
   - डॉ. लक्ष्मण सिंह बटरोही 48-49
9. एक पारदर्शी स्नेहल व्यक्तित्व - चुलकीमठ 50-53
10. प्रगतिचेता रचनाधर्मी देवेश ठाकुर - पी. एस. पाटील 54-56
11. डॉ. देवेश ठाकुर और समीचीन-कमलेश बक्शी 57-57
12. देवेश सर के साथ बीते मेरे स्वर्णिम वर्ष - डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट 58-61
13. कुछ पल देवेश ठाकुर के साथ -डॉ. दिलीप मेहरा 62-63
14. चर्चित लेखक देवेश ठाकुर से मुलाकात - रीता दास राम 64-66
15. गुरु बिन ज्ञान नहीं, जीवन में मान नहीं
   - डॉ. विशाखा ठाकूर 67-70
16. देवेश ठाकुर- संस्मरण - डॉ. कोयल विश्वास 71-73
17. मानवीय आस्था के संरक्षक डॉ. देवेश ठाकुर - डॉ. नीरा नहाटा 74-74
18. लेखक की याद में -डॉ. भगवती प्रसाद उपाध्याय 75-78
19. विचारों के साधक मेरे गुरुवर : डॉ. देवेश ठाकुर
   - डॉ. दयानंद तिवारी 79-82
20. ऐसे थे मेरे सर -डॉ. वंदना प्रदीप 83-84
21. एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व - डॉ. मनोज कुमार दुबे 85-87
22. फिर मुलाकात की आरजू अधूरी रह गई - शारदा कहार 88-93

आकलन :

23. अपने-अपने द्वन्द्व - श्यामसुंदर पाण्डेय 94-98
24. और सुबह हो गई - डॉ. महेश दवंगे 99-105
25. सम्बन्धों के घेरे : एकाकी जीवन का मर्मभेदी चित्रण
   - डॉ. बसुन्धरा उपाध्याय 106-111

Reg. No. MAHHIN / 2008 / 26222 ISSN-2250-2335

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की त्रैमासिक अव्यावसायिक पत्रिका)

पीयर रिव्यूड जर्नल

• वर्ष - 18 • अंक 2 • पूर्णांक 80 • अप्रैल - जून 2025 • मूल्य : 100 रुपए

संपादक - डॉ. सतीश पांडेय 43

सम्बन्धों के घेरे : एकाकी जीवन का मर्मभेदी चित्रण

- डॉ. बसुन्धरा उपाध्याय

किसी भी साहित्यकार की साहित्यिक कृति जिस समाज, देश और कालखंड में जन्म लेती है उस समाज, देश और काल का असर उस कृति पर पड़ना लाज़िमी है। उस काल की तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विचारधाराओं के बीच से ही साहित्यकार की चेतना का विकास होता है, जिसमें किसी भी जाति, समाज या राष्ट्र की चित्तवृत्ति का प्रतिबिम्ब होता है। साहित्यकार के व्यक्तिगत दृष्टिकोण को उस युग की परिस्थितियाँऔर बदलती हुई सामाजिक चेतना बहुत दूर तक प्रभावित करती है। भूतकाल साहित्यकार को अनुभव प्रदान करता है, भविष्य उसमें आशा का संचार करता है, परंतु वर्तमान साहित्यकार का निर्माण करता है। साहित्यकार युग चेतना से प्रभावित रहता है। साहित्य के अंतर्गत आने वाली सभी विधाओं में जीवन और उसके परिवेश को अभिव्यक्त करने वाली सबसे सशक्त विधा उपन्यास ही है। इसी कारण उपन्यास साहित्य में युग की संपूर्ण परिस्थितियाँ और समस्याएँ समाहित हो जाती हैं ।

किसी भी रचनाकार की रचनात्मक प्रक्रिया को जानने से पूर्व अनिवार्य हो जाता है कि उसकी जीवन-सृष्टि का ज्ञान प्राप्त किया जाए क्योंकि रचनाकार के जीवन को जाने बिना हम उसके मनोजगत, परिवेश व साहित्य के घनिष्ठ सम्बन्ध में कहने में असमर्थ हो जाते हैं। दूसरे, रचनाकार अपने बारे में स्वयं कुछ कहने में असमर्थ हो जाता है। वह कभी अपने बारे में प्रत्यक्ष कुछ नहीं कहता। उसके परिचितों परिवारजनों से उसका अधिकांश जीवन परिचय प्राप्त होता है तथा उसकी अन्तरंगता साहित्य से क्योंकि साहित्यकार का जीवन साहित्य से अभिन्न रूप से जुड़ा होता है। साहित्य उसका भोगा हुआ यथार्थ होता है जिसमें उसकी गहन अनुभूतियाँ रंग पाकर साकार हुई होती हैं।

साहित्यकार के जीवन से अभिज्ञ होकर पाठक उसकी साहित्यिक कृतियों में आनंदालीन हो जाता है परंतु जहाँ तक उसकी साहित्यिक कृतियों के मूल्यांकन का प्रश्न है, वह उसकी परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में ही, सही रूप में सम्भव है। रचनाकार अपनी योग्यता से संसार की अपनी अनुभूतियों को कल्पना से मूर्तमान करता है जिस तरह कथा के संगठन के लिए वस्तुत्त्व की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार साहित्य-अध्ययन के लिए पृष्ठभूमि का ज्ञान होना भी आवश्यक होता है। अतएव आपके उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने से पूर्व देवेश ठाकुर का जीवन परिचय उनके परिवेश से जानने का प्रयास किया गया है।

देशकाल और वातावरण को परिवेश कहते हैं। किसी व्यक्ति अथवा समाज को ही उपन्यास अपने वर्णन का आधार बनाता है। वर्ण्य व्यक्ति अथवा समाज के आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-नीति, भाषा और उसके आस-पास घिरी परिस्थितियाँ ही

106 / 113

देशकाल और वातावरण की संज्ञा धारण करती हैं।[1]

सम्बन्धों के घेरे उपन्यास की शुरूआत भी अस्पताल से होती है। दुर्वा जो कि एक नर्स है, वह अपने मरीज की बड़े मनोयोग से सेवा करती है। उपन्यासकार लिखता है कि अभी तक सर्वत्र सन्नाटा और अंधकार पसरा हुआ है। बस, हिमाद्रि हॉस्पिटल के पैसेज में कुछ छोटे बल्बों की रोशनी मद्धिम-मद्धिम उजास फैला रही है। शेष पूरी रात अँधेरे की चुप्पी में खोई लगती है। तभी एक नर्स पैसेज के एक छोर की खिड़की के

सम्बन्धों के घेरे : एकाकी जीवन का मर्मभेदी चित्रण

– डॉ. बसुन्धरा उपाध्याय

किसी भी साहित्यकार की साहित्यिक कृति जिस समाज, देश और कालखंड में जन्म लेती है उस समाज, देश और काल का असर उस कृति पर पड़ना लाज़िमी है। उस काल की तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विचारधाराओं के बीच से ही साहित्यकार की चेतना का विकास होता है, जिसमें किसी भी जाति, समाज या राष्ट्र की चित्तवृत्ति का प्रतिबिम्ब होता है। साहित्यकार के व्यक्तिगत दृष्टिकोण को उस युग की परिस्थितियाँऔर बदलती हुई सामाजिक चेतना बहुत दूर तक प्रभावित करती है। भूतकाल साहित्यकार को अनुभव प्रदान करता है, भविष्य उसमें आशा का संचार करता है, परंतु वर्तमान साहित्यकार का निर्माण करता है। साहित्यकार युग चेतना से प्रभावित रहता है। साहित्य के अंतर्गत आने वाली सभी विधाओं में जीवन और उसके परिवेश को अभिव्यक्त करने वाली सबसे सशक्त विधा उपन्यास ही है। इसी कारण उपन्यास साहित्य में युग की संपूर्ण परिस्थितियाँ और समस्याएँ समाहित हो जाती हैं ।

किसी भी रचनाकार की रचनात्मक प्रक्रिया को जानने से पूर्व अनिवार्य हो जाता है कि उसकी जीवन-सृष्टि का ज्ञान प्राप्त किया जाए क्योंकि रचनाकार के जीवन को जाने बिना हम उसके मनोजगत, परिवेश व साहित्य के घनिष्ठ सम्बन्ध में कहने में असमर्थ हो जाते हैं। दूसरे, रचनाकार अपने बारे में स्वयं कुछ कहने में असमर्थ हो जाता है। वह कभी अपने बारे में प्रत्यक्ष कुछ नहीं कहता। उसके परिचितों परिवारजनों से उसका अधिकांश जीवन परिचय प्राप्त होता है तथा उसकी अन्तरंगता साहित्य से क्योंकि साहित्यकार का जीवन साहित्य से अभिन्न रूप से जुड़ा होता है। साहित्य उसका भोगा हुआ यथार्थ होता है जिसमें उसकी गहन अनुभूतियाँ रंग पाकर साकार हुई होती हैं।

साहित्यकार के जीवन से अभिज्ञ होकर पाठक उसकी साहित्यिक कृतियों में आनंदालीन हो जाता है परंतु जहाँ तक उसकी साहित्यिक कृतियों के मूल्यांकन का प्रश्न है, वह उसकी परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में ही, सही रूप में सम्भव है। रचनाकार अपनी योग्यता से संसार की अपनी अनुभूतियों को कल्पना से मूर्तमान करता है जिस तरह कथा के संगठन के लिए वस्तुत्त्व की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार साहित्य-अध्ययन के लिए पृष्ठभूमि का ज्ञान होना भी आवश्यक होता है। अतएव आपके उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने से पूर्व देवेश ठाकुर का जीवन परिचय उनके परिवेश से जानने का प्रयास किया गया है।

देशकाल और वातावरण को परिवेश कहते हैं। किसी व्यक्ति अथवा समाज को ही उपन्यास अपने वर्णन का आधार बनाता है। वर्ण्य व्यक्ति अथवा समाज के आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-नीति, भाषा और उसके आस-पास घिरी परिस्थितियाँ ही